हाथियों के लिए जुनून

एक फील्ड साइंटिस्ट का रोमांचक जीवन
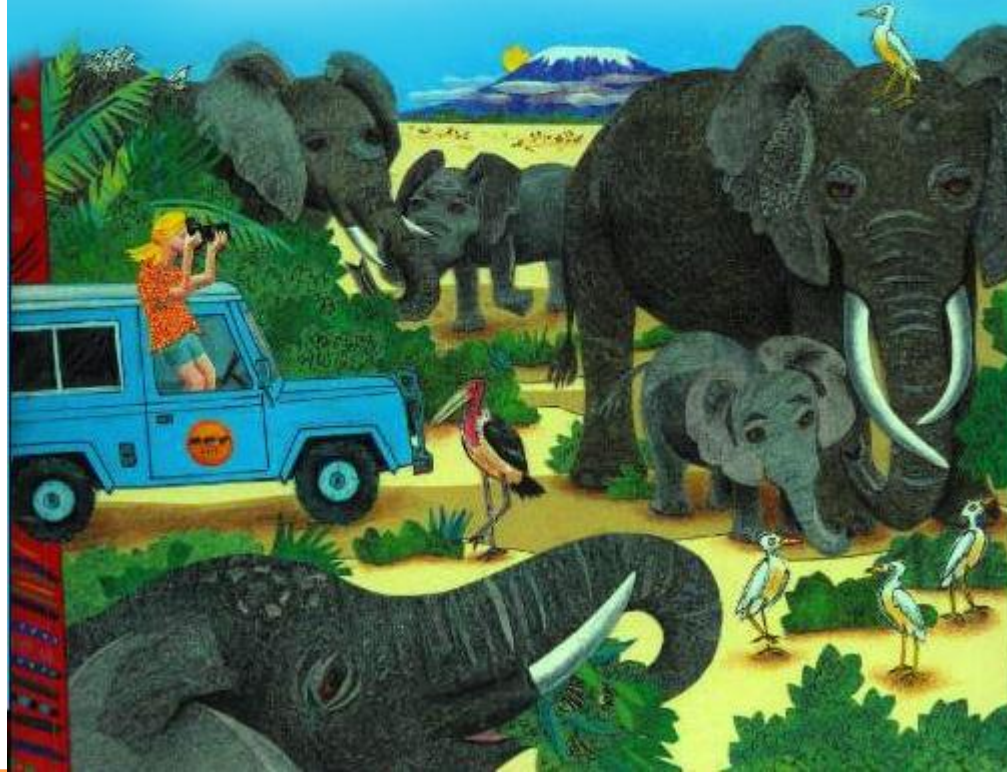
एक घोड़े की ऊँची पीठ की कल्पना करें जिसके पार आप देख नहीं सकें.

अब आप एक छोटी लड़की की कल्पना करें, जो सिर्फ सात साल की. वो उस ऊँचे घोड़े पर सवार थी, और वो जमीन से बहुत ऊंचाई पर थी. वो छोटी लड़की थी - **सिंथिया जेन मॉस**.

वो डरती नहीं थी.

सिंथिया मॉस को बड़ी चीजों से डर नहीं लगता था.

जब सिंथिया बारह साल की थी, तब तक वो अपने खुद के घोड़े केली पर ओस्सिंग, न्यूयॉर्क में अपने घर के पास सरपट दौड़ लगाती थी.

सिंथिया ने और केली ने हिरणों और लोमड़ियों को देखा. इस प्रकार सिंथिया का जंगलों के प्रति प्रेम बढ़ा और उसे प्रकृति के सभी जीवों से प्यार हुआ.
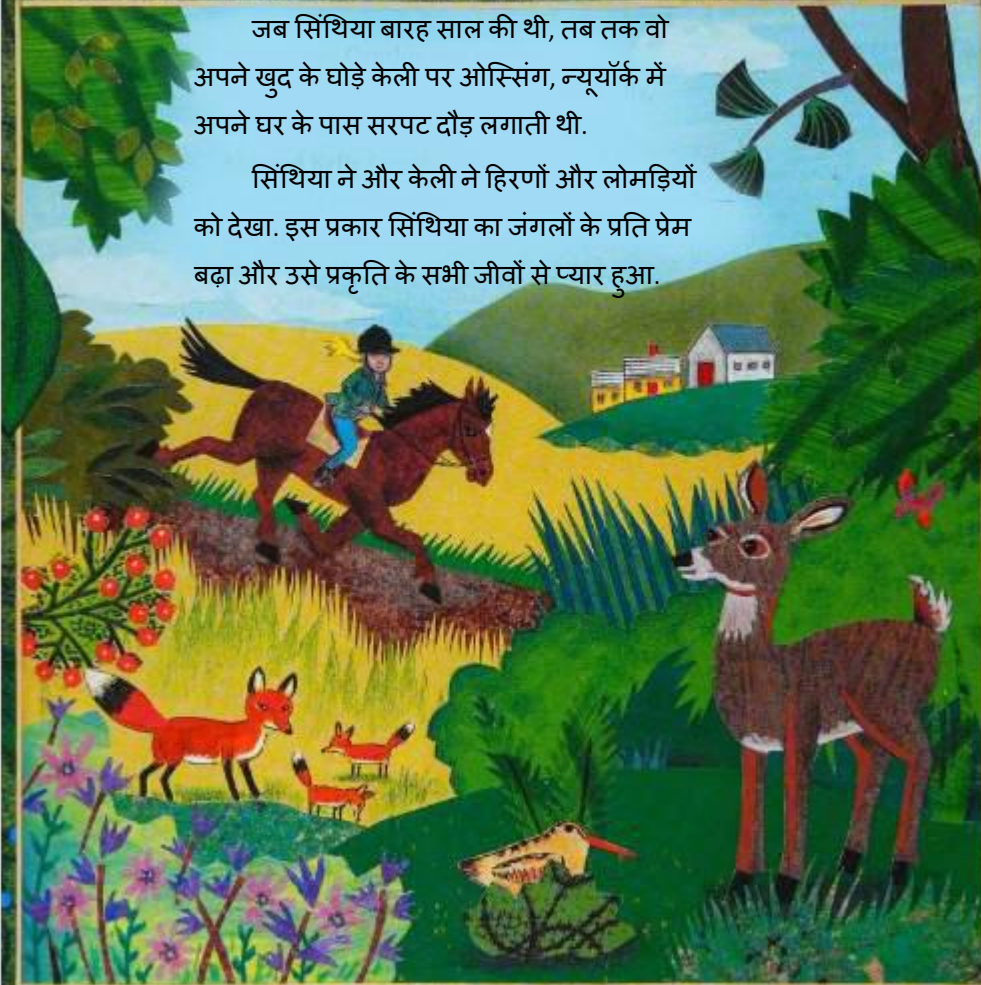
सोलह साल की उम्र में सिंथिया घर से दूर अपनी पहली एकल साहसिक यात्रा पर निकली.

सुदूर वर्जीनिया में एक स्कूल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए उसने चार सौ मील से अधिक दक्षिण की यात्रा की. उसमें भाग लेने वाले सभी लोगों को घुड़सवारी से उस जैसा ही प्यार था.

बाद में, जब सिंथिया ने कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म की तो उसे यह नहीं पता था कि जल्द ही वो अपना सबसे बड़ा साहसिक कार्य शुरू करेगी – वो एक वैज्ञानिक बनेगी!
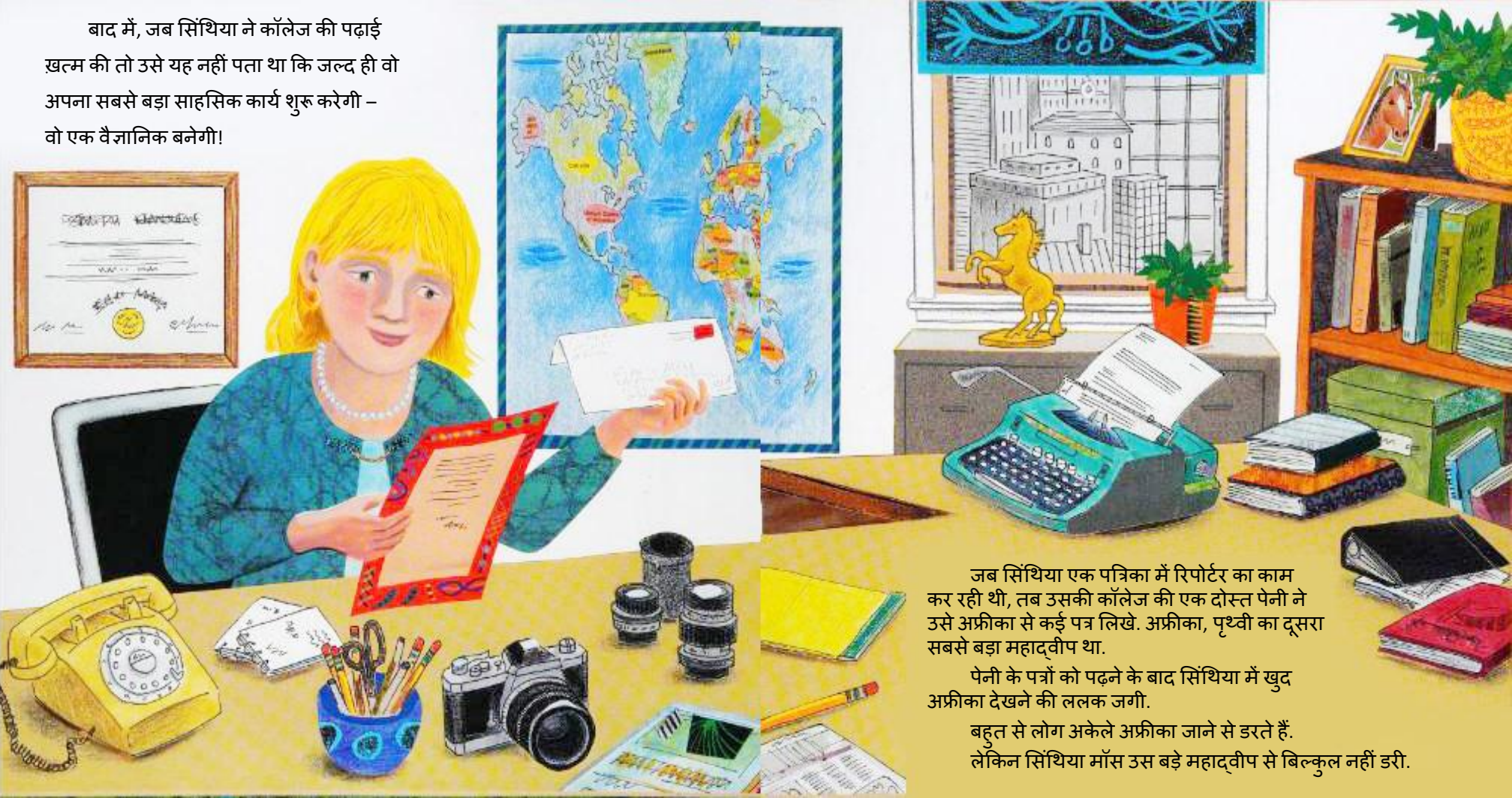
जब सिंथिया एक पत्रिका में रिपोर्टर का काम कर रही थी, तब उसकी कॉलेज की एक दोस्त पेनी ने उसे अफ्रीका से कई पत्र लिखे. अफ्रीका, पृथ्वी का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप था.

पेनी के पत्रों को पढ़ने के बाद सिंथिया में खुद अफ्रीका देखने की ललक जगी.

बहुत से लोग अकेले अफ्रीका जाने से डरते हैं.

लेकिन सिंथिया मॉस उस बड़े महाद्वीप से बिल्कुल नहीं डरी.

वहां पहुँचने के बाद सिंथिया को अफ्रीका से प्यार हो गया.

"अफ्रीका पहुंचने के एक हफ्ते के भीतर," उसने कहा, "मुझे यह समझ में आया कि अब मैं अपने घर आई हूँ."

सिंथिया, पूर्वी अफ्रीका के व्यापक-खुले मैदानों में अपना बाकी जीवन बिताना चाहती थी.
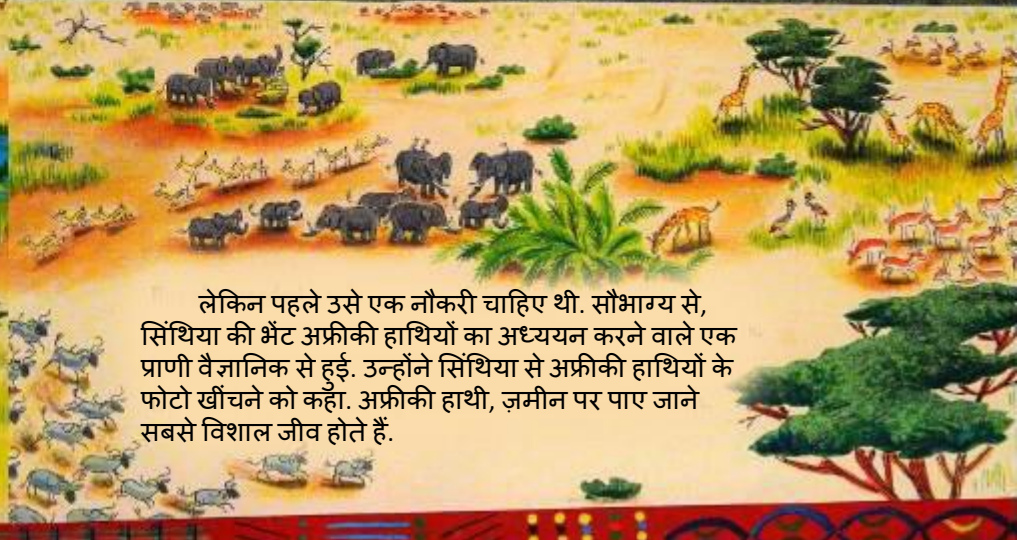
लेकिन पहले उसे एक नौकरी चाहिए थी. सौभाग्य से, सिंथिया की भेंट अफ्रीकी हाथियों का अध्ययन करने वाले एक प्राणी वैज्ञानिक से हुई. उन्होंने सिंथिया से अफ्रीकी हाथियों के फोटो खींचने को कहा. अफ्रीकी हाथी, ज़मीन पर पाए जाने सबसे विशाल जीव होते हैं.

कल्पना कीजिए कि आपके पास एक कैमरा है और आप एक विशाल पार्क में हैं जो हाथियों से भरा है. हर कोने से उनकी छोटी भूरी आँखें, उनकी झुर्रीदार सिलेटी खाल, उनकी लंबी, मजबूत, लचीली सूंड, और उनके नरम गद्देदार पैर आपको दिखाई दे रहे हैं.

लेकिन सिंथिया ने हाथियों के कानों के बाहरी किनारों पर नसों, छेदों और कटी स्लिट का अध्ययन किया.

उसने हाथियों के लंबे हाथी-दांतों को गौर से देखा - घुमावदार, सीधे, टूटे, और गायब भी.

सिंथिया ने हाथियों को अलग-अलग करना और उन्हें पहचानना सीखा.

जल्द ही सिंथिया को उन विशाल, कोमल जानवरों से प्रेम हो गया. उसे हाथियों के जंगलों और उनके धूल भरे घरों से भी प्यार हो गया.

"वे इतने प्रभावशाली, उल्लेखनीय और जटिल प्राणी हैं," उसने कहा, "मैं उन्हें अध्ययन करने के लिए अपना जीवन समर्पित करूंगी."

इसलिए सिंथिया ने एम्बोसली एलिफेंट रिसर्च प्रोजेक्ट शुरू किया.

सिंथिया को तब यह पता नहीं था कि वो काम उसके जीवन का मिशन बन जायेगा.

वो सिर्फ इतना जानती थी कि वो हाथियों के बारे में और अधिक सीखना चाहती थी.

वो यह जानना चाहती थी कि हाथी परिवारों में कैसे रहते थे. जब खूब बारिश होती थी और घास रसीली होती थी तो उनके परिवार बड़े-बड़े समूह बन जाते थे.

जब बारिश कम होती और सूखा पड़ता था तब यह समूह एक-दूसरे को जीवित रहने में कैसे सहायता करते थे?
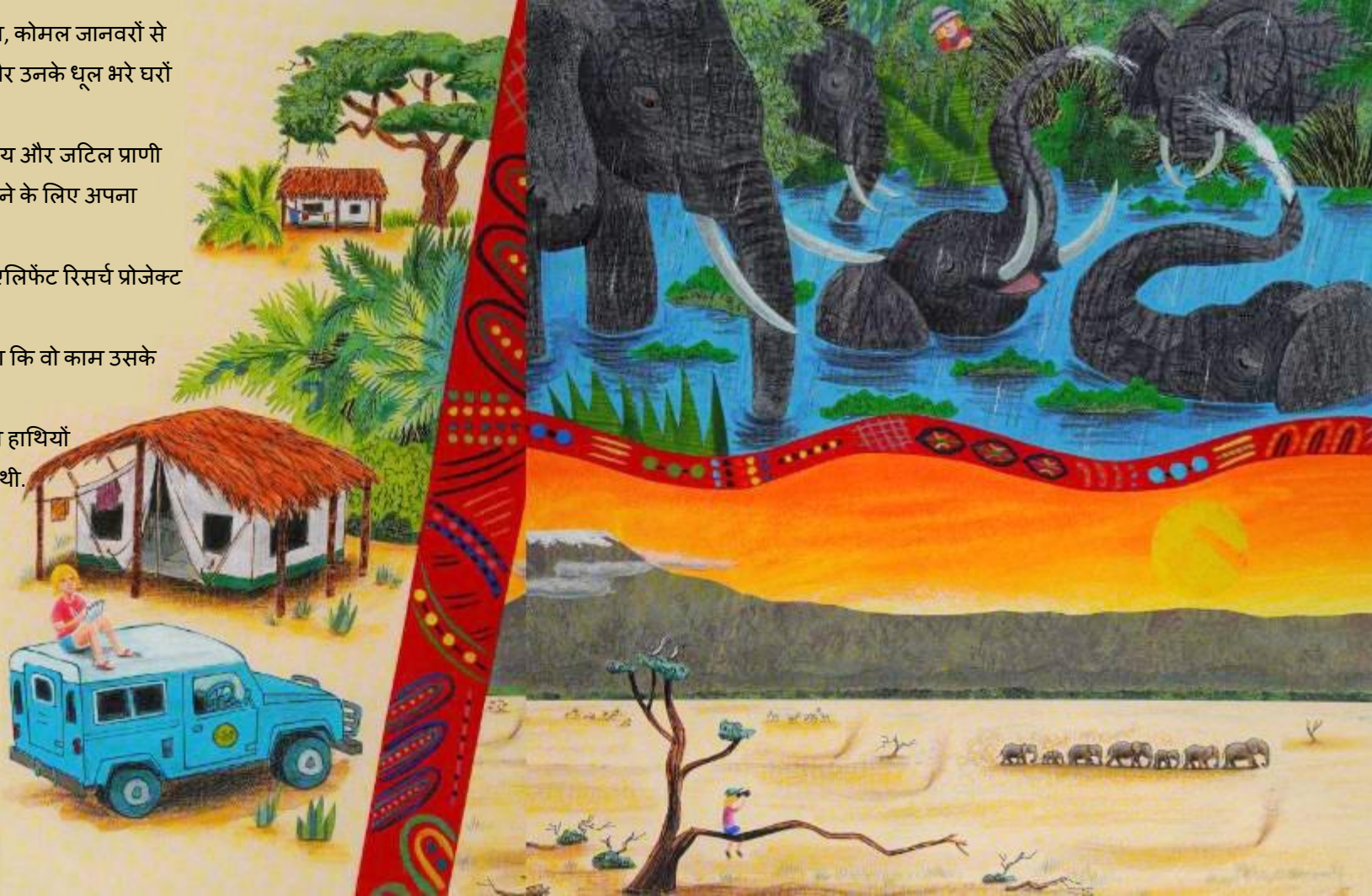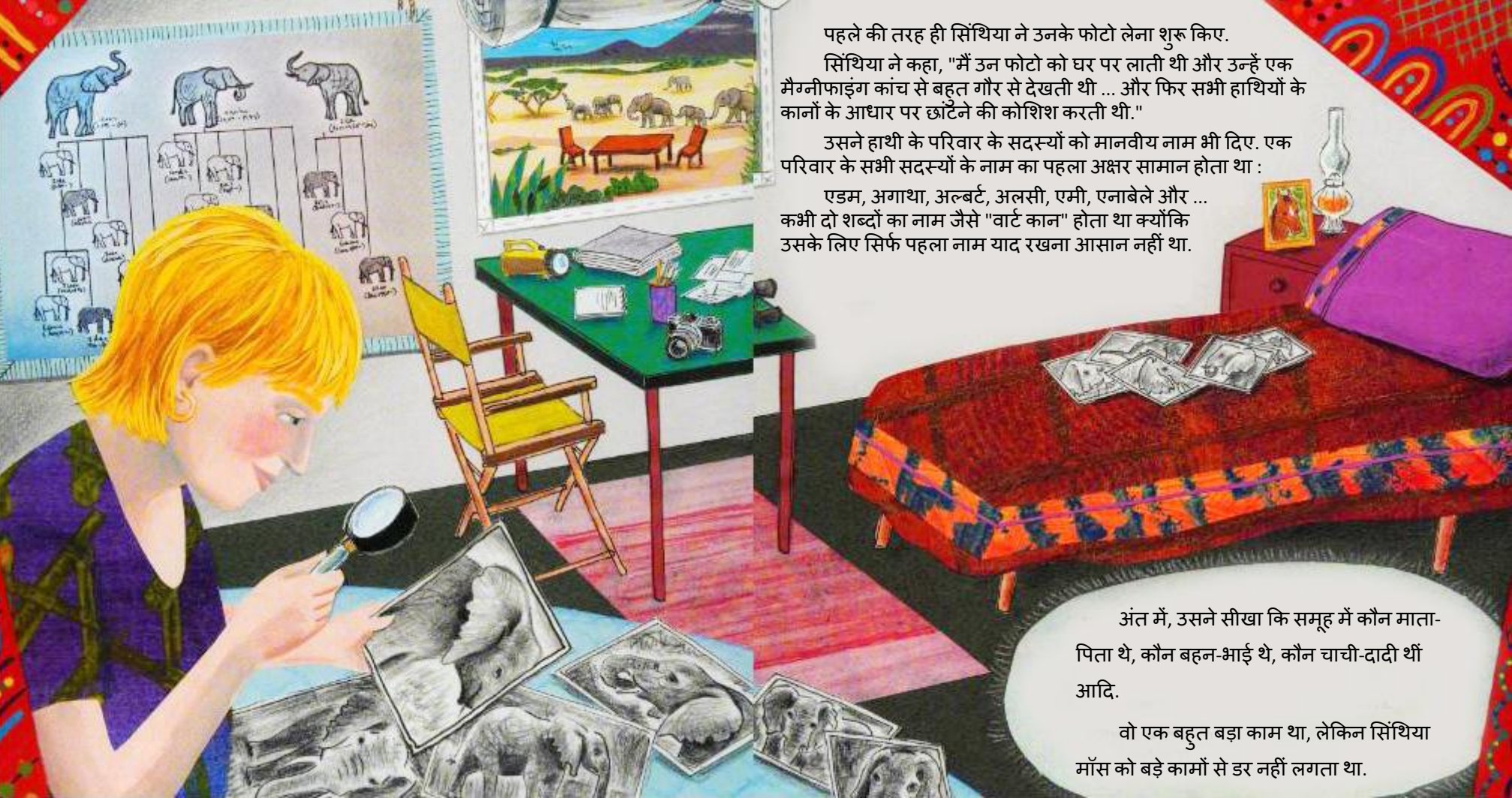
पहले की तरह ही सिंथिया ने उनके फोटो लेना शुरू किए.

सिंथिया ने कहा, "मैं उन फोटो को घर पर लाती थी और उन्हें एक मैग्नीफाइंग कांच से बहुत गौर से देखती थी ... और फिर सभी हाथियों के कानों के आधार पर छांटने की कोशिश करती थी."

उसने हाथी के परिवार के सदस्यों को मानवीय नाम भी दिए. एक परिवार के सभी सदस्यों के नाम का पहला अक्षर सामान होता था :

एडम, अगाथा, अल्बर्ट, अलसी, एमी, एनाबेले और ... कभी दो शब्दों का नाम जैसे "वार्ट कान" होता था क्योंकि उसके लिए सिर्फ पहला नाम याद रखना आसान नहीं था.

अंत में, उसने सीखा कि समूह में कौन माता-पिता थे, कौन बहन-भाई थे, कौन चाची-दादी थीं आदि.

वो एक बहुत बड़ा काम था, लेकिन सिंथिया मॉस को बड़े कामों से डर नहीं लगता था.

इस बीच, सिंथिया ने एम्बोसेली नेशनल पार्क में एक स्थायी शिविर बनाया.

शिविर की छत पर लगे तम्बू में से अफ्रीका के सबसे ऊंचे पर्वत, माउंट किलिमंजारो की बर्फ से ढकी चोटी का दृश्य दिखता था.
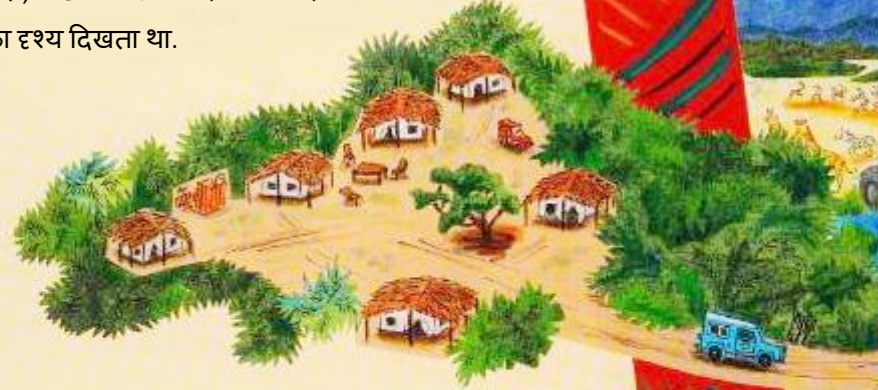
सिंथिया अपनी लैंड रोवर में हर दिन पार्क में घूमती थी और हाथियों के बच्चों को उनकी सूंड से मिट्टी में खेलते और चीखते हुए देखती थी.

तब मां हथनियां अपने बच्चों की रखवाली करती थीं - भूखे शेरों और चितकबरे लकड़बग्घों से.

और जब बिछड़े हुए हाथी एक-दूसरे से दुबारा मिलते, तो वे एक-दूसरे के शरीर को सहलाते, अपनी सूंड को एक साथ लपेटते, कानों को फड़फड़ाते, और अपने हाथी-दांतों के रगड़ते, और फिर चीखते-चिल्लाते और एक-दूसरे का अभिवादन करते.
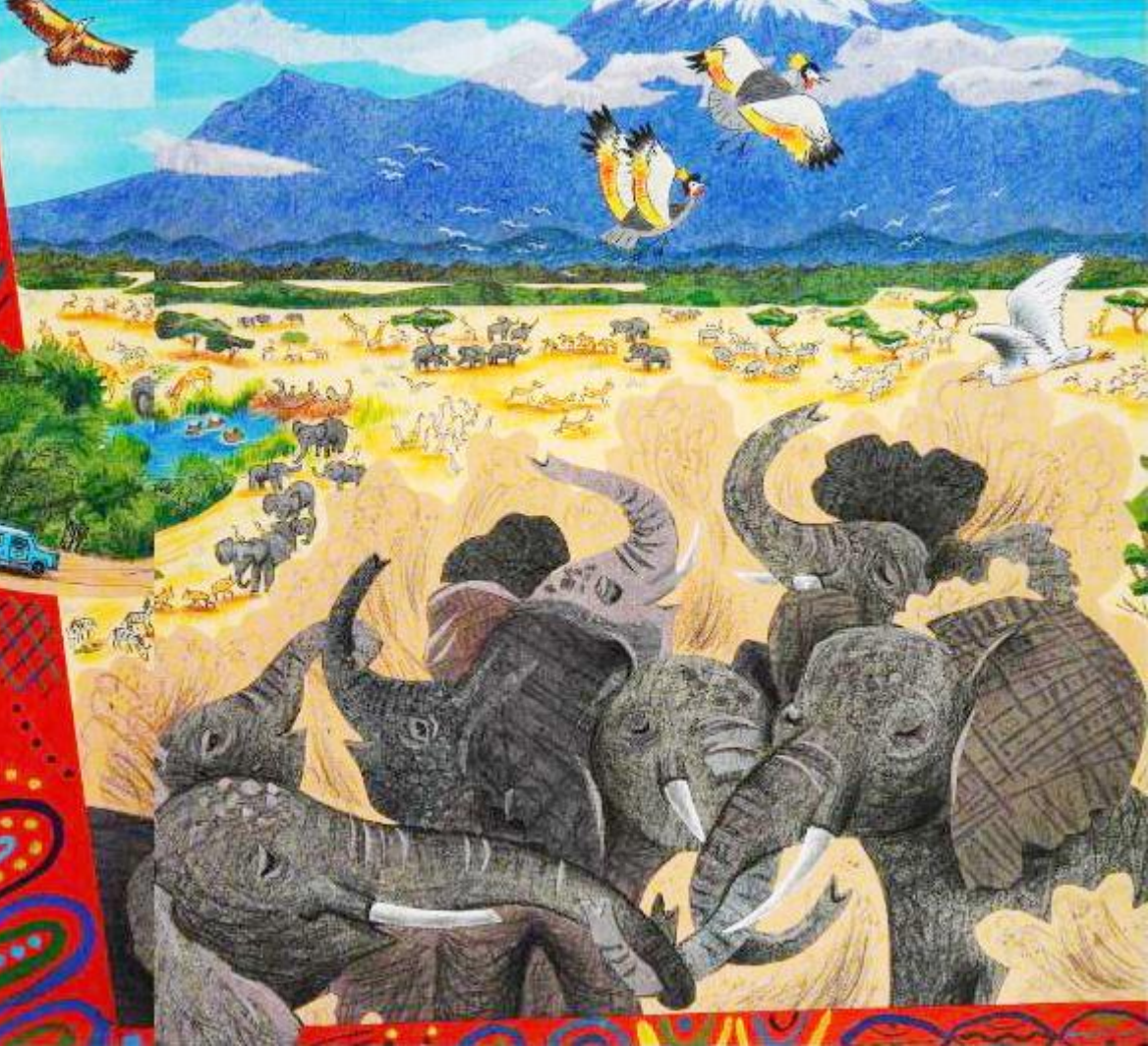
सिंथिया ने दादी, और बूढ़ी नानी हथनियों को देखा, जिन्हें बारिश फेल होने पर भी भोजन और पानी के सर्वोत्तम स्थान याद थे.

सिंथिया अपनी विशेष पसंदीदा हथिनी "इको" को देखती और उससे सीखती थी. इको, के लंबे घुमावदार दांत थे. कल्पना करें जब वो सुंदर मातृवंश की हथिनी धीरे-धीरे सिंथिया की लैंड रोवर की ओर आई और उसने अपनी सूंड से उसे छुआ और ऐसे टकटकी लगाकर देखा जैसे वो नमस्ते कर रही हो.

सिंथिया ने धीरे-धीरे हाथी परिवार के व्यवहार के बारे में कई ऐसी बातें सीखीं जिनके बारे में और कोई नहीं जानता था.

सिंथिया ने कहा, "हाथी वो चीज़ें करते हैं जिनकी अपेक्षा हम अपने सबसे अच्छे दोस्तों से करते हैं."

"वे एक-दूसरे का बचाव करते हैं, वे एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं, और वे एक-दूसरे का सहयोग करते हैं."

लेकिन सभी लोग हाथियों से सिंथिया जितना प्यार नहीं करते थे.

सिर्फ दस सालों में अफ्रीका के आधे हाथी मारे गए थे.

उन सालों में हर दस मिनट में, दुनिया में कम-से-कम एक हाथी की मौत हुई.

कल्पना करें एक विशाल नर हाथी की, जो अफ्रीका के सवाना मैदान में टहलते हुए, घास और छोटी झाड़ियों को अपने घुमावदार दांतों से उखाड़ता है और नीले विशाल आकाश के नीचे चुपचाप उन्हें कुतरता है.

अब कल्पना करें कि अगले ही दिन वो हाथी चिलचिलाते सूरज में मरा पड़ा है, उसके सुंदर हाथी दांत गायब हैं, जिनके उपयोग से पियानो की कुंजियां, नक्काशी के आइटम या गहने बनते हैं.

जब सबसे पुराने नर और मादा हाथियों के मूल्यवान टस्क गायब हो गए, तब सिंथिया को उन हाथियों के परिवारों की चिंता हुई.

अब पिता हाथी कौन बनेगा?

हाथियों के बच्चों की रक्षा कौन करेगा?

भोजन और पानी खोजने के लिए परिवारों को कौन गुप्त स्थान दिखाएगा?
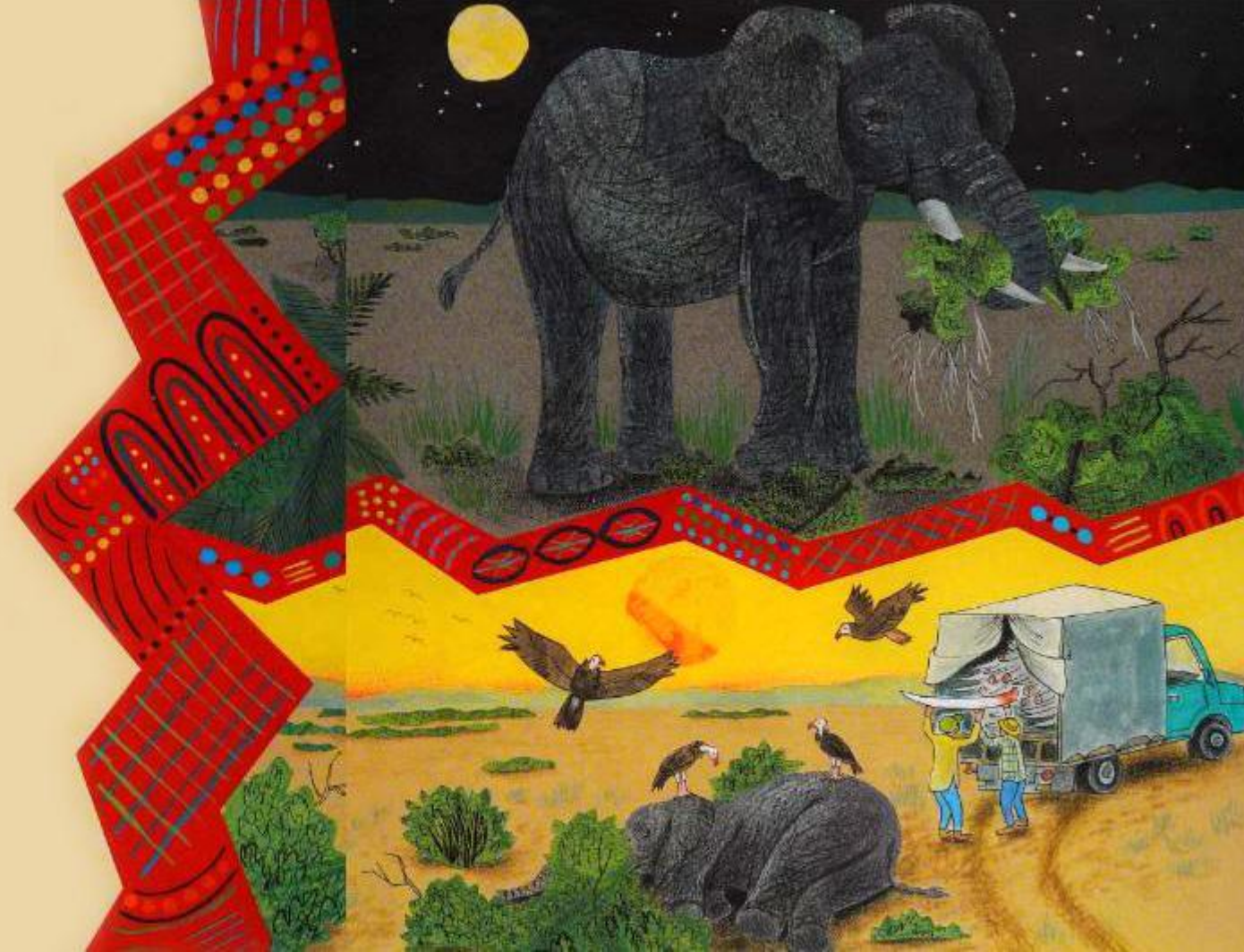
सिंथिया ने आइवरी के बारे में पूरी दुनिया को बताना शुरू किया.

उसने कहा कि हाथी दांत एक सुंदर पदार्थ है जो खुदाई होने के बाद बहुत अच्छी तरह चमकता है.

पर लोग यह बात भूल जाते हैं कि आइवरी कभी एक जीवित हाथी का दांत था.

लालची शिकारी हाथी को उसके दांत के लिए मारते हैं.
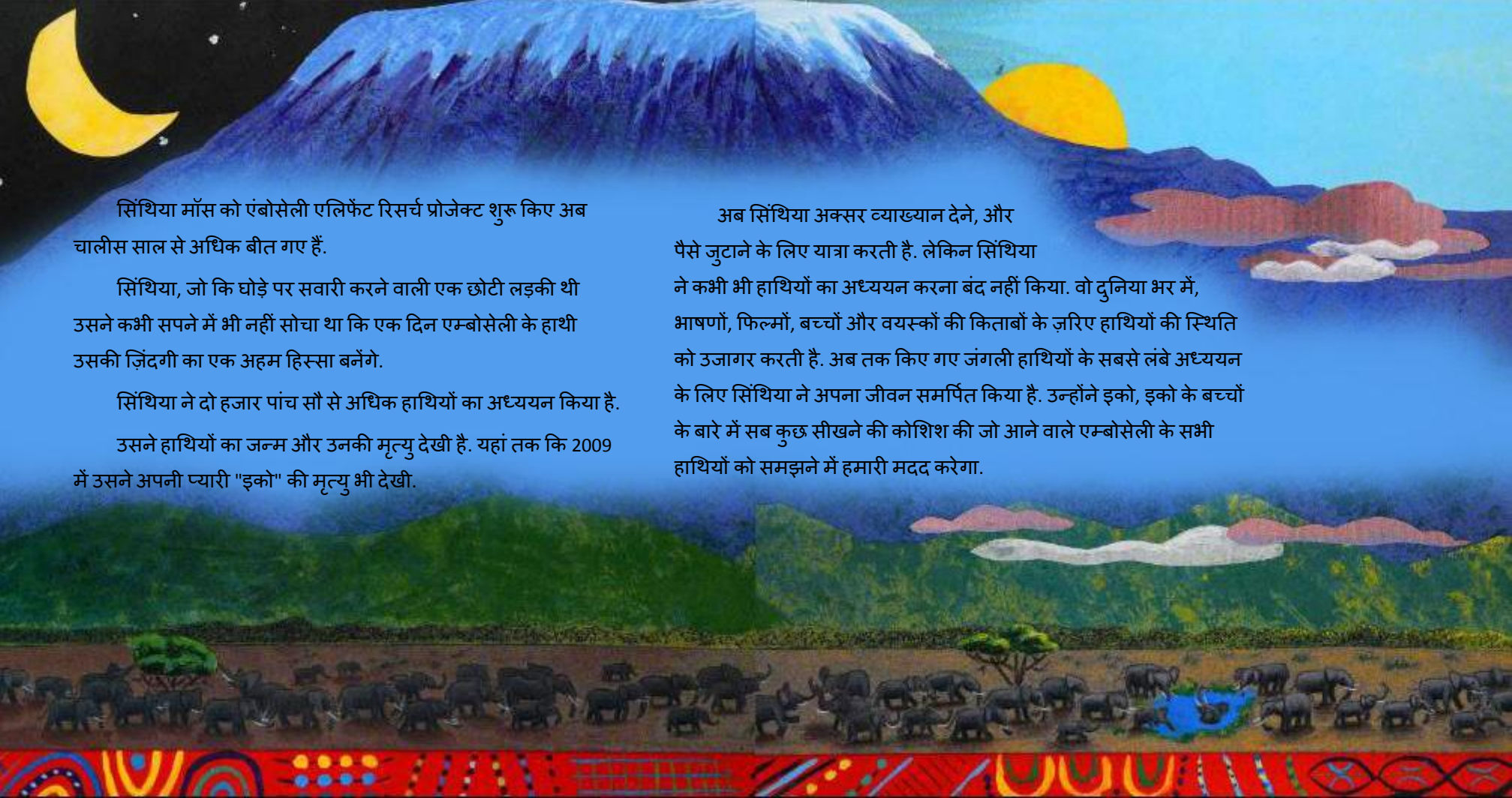
फिर सिंथिया हाथी दांत को अवैध करार देने की विश्व लड़ाई में शामिल हुई.

यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी, लेकिन सिंथिया मॉस बड़ी चुनौतियों से डरती नहीं थीं.

जनवरी 1990 में, हाथी दांत की बिक्री पर विश्व स्तर पर प्रतिबंध लगा. लेकिन सभी देश इस प्रतिबंध से सहमत नहीं हुए, और इसलिए हाथी दांत की लड़ाई समाप्त नहीं हुई. बहुत से लोग अभी भी हाथी दांत को इतना चाहते थे, कि वे आइवरी के लिए एक शांत अफ्रीकी विशाल हाथी को मार देते थे. सिंथिया ने इसके खिलाफ हमेशा अपनी आवाज़ उठाई.

सिंथिया मॉस को एंबोसेली एलिफेंट रिसर्च प्रोजेक्ट शुरू किए अब चालीस साल से अधिक बीत गए हैं.

सिंथिया, जो कि घोड़े पर सवारी करने वाली एक छोटी लड़की थी उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन एम्बोसेली के हाथी उसकी ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा बनेंगे.

सिंथिया ने दो हजार पांच सौ से अधिक हाथियों का अध्ययन किया है.

उसने हाथियों का जन्म और उनकी मृत्यु देखी है. यहां तक कि 2009 में उसने अपनी प्यारी "इको" की मृत्यु भी देखी.

अब सिंथिया अक्सर व्याख्यान देने, और पैसे जुटाने के लिए यात्रा करती है. लेकिन सिंथिया ने कभी भी हाथियों का अध्ययन करना बंद नहीं किया. वो दुनिया भर में, भाषणों, फिल्मों, बच्चों और वयस्कों की किताबों के ज़रिए हाथियों की स्थिति को उजागर करती है. अब तक किए गए जंगली हाथियों के सबसे लंबे अध्ययन के लिए सिंथिया ने अपना जीवन समर्पित किया है. उन्होंने इको, इको के बच्चों के बारे में सब कुछ सीखने की कोशिश की जो आने वाले एम्बोसेली के सभी हाथियों को समझने में हमारी मदद करेगा.

यह बहुत बड़ा काम है.

लेकिन सिंथिया मॉस बड़े काम से डरती नहीं हैं.
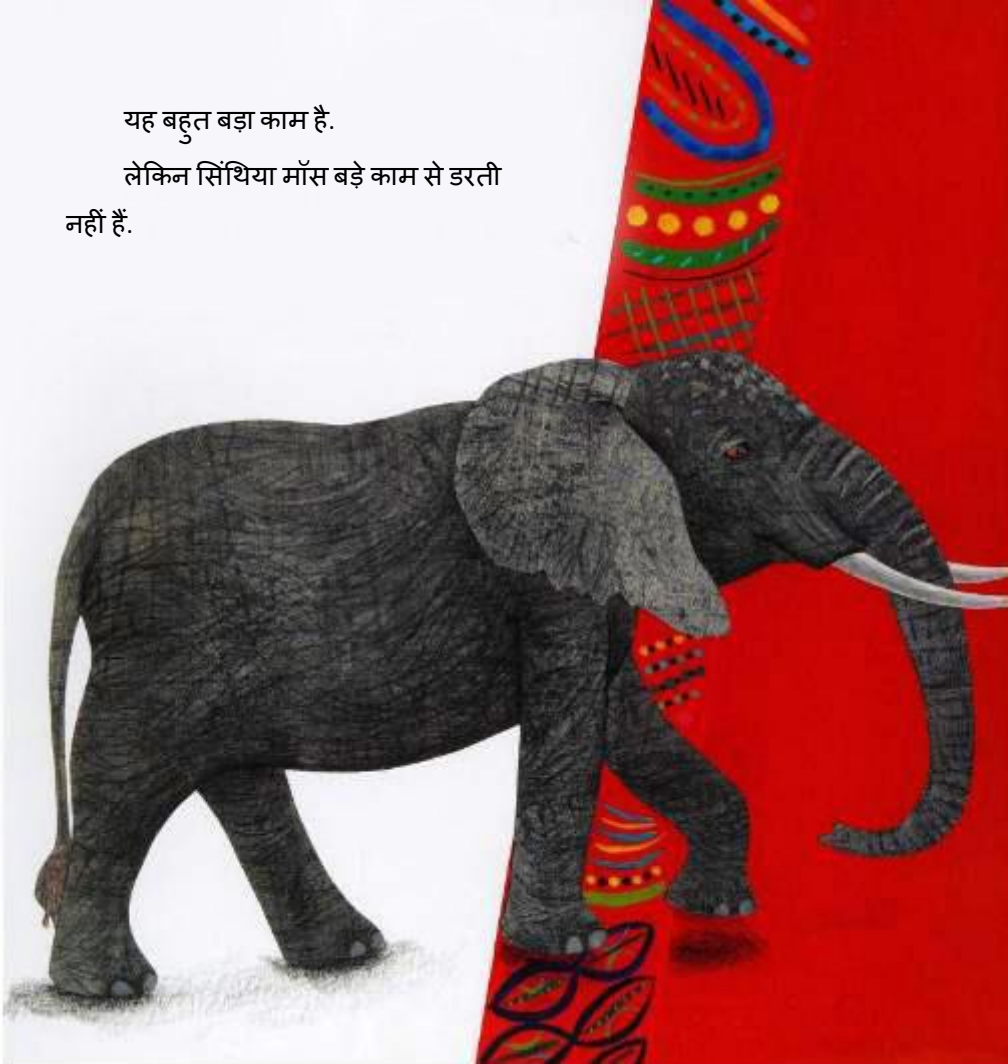
सिंथिया मॉस का जन्म 1940 में हुआ था और उन्होंने पिछले चालीस साल केन्या के एम्बोसेली नेशनल पार्क में हाथियों के साथ रहने में और उनके अध्ययन में बिताए हैं.

वर्जीनिया में दक्षिणी सेमिनरी से स्नातक होने के बाद, उन्होंने स्मिथ कॉलेज में दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया. 1962 में कॉलेज की डिग्री के दो साल बाद, सिंथिया ने एक रिपोर्टर और शोधकर्ता की हैसियत से न्यूज़वीक पत्रिका में काम किया. तब उनकी कॉलेज के दोस्त पेनी नेलोर उन्हें अफ्रीका से लंबे, वर्णनात्मक पत्र लिखती थीं. 1967 में सिंथिया ने खुद अफ्रीका जाने की सोची. फिर उन्हें अफ्रीका और वहां के हाथियों - दोनों से प्यार हुआ. सिंथिया के दोनों माता-पिता का निधन हो गया था, और उनकी छोटी बहन कैरोलिन को छोड़कर परिवार में और कोई नहीं था. इसलिए वो अमेरिका छोड़कर अफ्रीका चली गईं.

जब सिंथिया पहली बार अफ्रीका गईं तो भाग्य से उनकी भेंट स्कॉटिश ज़ूलॉजिस्ट इयन डगलस-हैमिल्टन से हुई. वो उत्तरी तंजानिया के लेक मैनारा नेशनल पार्क में हाथियों की सामाजिक सहभागिता का अध्ययन कर रहे थे. व्यक्तिगत हाथियों को पहचानने के लिए, उन्हें पार्क में सभी चार सौ हाथियों की फोटोग्राफ्स की आवश्यकता थी. उन्होंने वो कार्य सिंथिया को सौंपा. काम पूरा होने के बाद सिंथिया ने अपना खुद का शोध प्रोजेक्ट शुरू करने का मन बनाया. अंततः सितंबर 1972 में वो अपने साथी शोधकर्ता हार्वे क्रोस के साथ उसे पूरा कर पाईं. साथ में, उन्होंने अंबोसली राष्ट्रीय उद्यान में एम्बोसेली हाथी अनुसंधान परियोजना की स्थापना की, जो दक्षिणी केन्या में संरक्षित भूमि के 150 वर्ग मील में फैली है. जब 1974 में क्रोस चले गए, तो सिंथिया वहीं रुकी और हाथियों के साथ रहीं.

हाथियों के बारे में अधिक जानने के लिए सिंथिया का जुनून कभी भी कम नहीं हुआ. वो उनके प्रति धैर्यवान और वफादार रहीं. नतीजतन, वो हाथियों के बारे में बहुत अधिक जानती हैं. वो हाथियों के बीच के परिवारिक रिश्तों के बारे में सवालों के नए जवाब तलाशती हैं. वो अपने हाथियों के बारे में बड़े प्यार से बोलती है, फिर चाहे वह एम्बोसेली में उसके कैंपसाइट में इंटरव्यू हो या वो दुनिया के किसी बड़े दानदाता से बात कर रही हों. पिछले चार दशकों से उनका जीवन हाथियों के जीवन के साथ करीबी से जुड़ा है.

अन्य शोधकर्ता भी अफ्रीकी हाथियों के अध्ययन में सक्रिय रहे हैं. दुनिया के सबसे महान हाथी वैज्ञानिकों में से एक वो व्यक्ति हैं जिन्होंने पहली बार सिंथिया का हाथियों से परिचय कराया था - डॉ. इयन डगलस-हैमिल्टन. उनकी मुख्य शोध रुचि हाथियों के भ्रमण से उनकी पसंद को समझना है. 1989 में उन्होंने विश्व हाथी दांत व्यापार प्रतिबंध को लाने में मदद की और अनुसंधान, संरक्षण, शिक्षा और संचार के माध्यम से अफ्रीकी हाथियों का भविष्य सुनिश्चित करने के लिए 1993 में सेव द एलिफेंट्स (www.savetheelephants.org) की स्थापना की.

अफ्रीका के हाथी अब गंभीर खतरे में हैं. जितना अधिक ये शोधकर्ता उनके बारे में सीखते हैं और उस ज्ञान को लोगों से साझा करते हैं, उतना ही दुनिया के लोग सिंथिया मॉस के प्रिय हाथियों को समझेंगे और उनसे प्रेम करेंगे.